जीवन कैसे जीना चाहिए

1- जीवन जीना चाहिए स्वमान के नशे से, शान्ति से आनन्द पूर्वक, सुखी, खुशहाल, मजे से एवं अर्थ पूर्ण, उद्देश्यपूर्ण, निर्मल, निर्लिप्त, कमल सम पवित्र, कर्मयोगी, सिद्धान्त युक्त, कायदे प्रमाण, रॉयल, उमंग-उत्साह से लवरेज, सफल, स्नेह, सिक्त, बड़ी दिल से, बेदाग, निर्विकारी, निष्कामी, स्वस्थ, दुआओं एवं गुणों से सम्पन्न, मधुरतम् शक्तिशाली, उपराम, वैराग्य वृत्तिवाला, त्यागी तपस्वी, इनोसेन्ट, सादगी सम्पन्न, सात्विक, सदाचारी, श्रेष्ठ, सम्माननीय, परोपकारी, उदार, सुन्दर, मितव्ययी जीवन जीना चाहिए परन्तु हम समझते हैं इसके लिए चाहिए – त्याग-तप- निश्चय ब्रह्मा बाप का, आज्ञाकारिता एवं निर्मानता मम्मा की, सत्यत–पवित्रता-पालना बड़ी दादी की, अनासक्त, वैराग्य, ज्ञान का चिंतन, दादी जानकी का, मैनेजमेन्ट की कुशलता बड़ी दीदी की समर्पणमयता बृजेन्द्रा दादी की, साधना आलराउण्डर दादी की, त्याग सन्तरी दादी का, निरसंकल्पता एवं रूहानियत गुल्जार दादी की, निर्मलता एवं सौम्यता निर्मलशान्ता दादी की, निर्भयता एवं निडरता दादी चन्द्रमणी की, स्नेह सती दादी का, एक्टीवनेस एण्ड एलर्टनेस रतनमोहिनी दादी, ईमानदारी ईशू दादी की, माधूर्य मिट्ठू दादी का, स्वच्छता भूरी दादी की, उदारता भोली दादी की, चात्रकता कुंज दादी की, प्रभु प्रेम गंगे दादी का, कर्तव्य निष्ठा हृदय पुष्पा दादी की, परखशक्ति सीतू दादी की, शान्ति शान्तामणि दादी की, रमणीकता मनोहर दादी की, सरलता सन्देशी दादी की, हृदय किशनी दादी का, हाँ जी विश्व रतन दादा का, सेवा भावना भाऊ किशोर की, सामायिकता आनन्द किशोर दादा की, विवेक, एकाग्रता ज्ञान का स्पष्टीकरण जगदीश भाई का, मुस्कान एवं चाल निर्वैर भाई की, समझदारी एवं गहराई रमेश शाह भाई की, लाइटनेस बृजमोहन भाई की, रमेश भाई (लिट्रेचर) की निश्चिंतता, राजू भाई की समभाव, अनुशासन एवं प्रशासन, आशा दीदी का, भोलापन कैलाश बहन जैसा, निश्छलता चक्रधारी दीदी जैसी, दिव्यता एवं विमलता जयन्ती बहन का, कायदे-कानून निर्मला दीदी जैसे, पुरुषार्थ मोहिनी बहन (न्यूयार्क) का हो तो यह जीवन ऐसा बन सकता है जिससे अपने साथ सारे जग का भला होगा और नाज होगा बाबा को और हमारे टीचर एवं समस्त ब्राह्मण परिवार को और सहज ही सभी से सन्तुष्टता का सर्टीफिकेट मिल जायेगा, खुश रहेगा और सदा सभी को खुशी बांटेगा, सदा शान्त-शान्त-शीतल-सुखी रहेगा और सबको सुखी करेगा ऐसा जीवन जो बाप की पहचान अपने चेहरे-चाल-चलन-चरित्र से कराये। ऐसा जीवन जीना चाहिए, साथ-साथ इसमें अगर ये एड कर दिया जाये तो फिर सोने पे सुहागा हो जायेगा।

अर्जुन की एकाग्रता, शुकदेव की इनोसेन्सी, हरिश्चन्द्र की सत्यता, मर्यादा पुरुषोत्तम राम की, अनासक्त राजा जनक की, तप विश्वामित्र का, प्रतिज्ञा राजा रघु की, सम्बन्ध प्रभु से मीरा का, वैराग्य बन्दा वैरागी का, सरलता बच्चे की, दिल हनुमान का, शरीर का सदुपयोग दधीचि सम, निर्लिप्तता कमल की, न्यारापन चन्दन के पेड़ का, निर्भयता शेर की, भुजायें दाता की, नयनशीतला देवी के, वाणी सरस्वती की, दृढ़ता पपीहे की, प्रेम भौरे का, पसंद के साथ लोक पसंद भी होगा ऐसे गुणों से सम्पन्न सुसंस्कारी जीवन जीना चाहिए व ऐसी ही जीवन बनाने की हमारी प्रथम व अन्तिम इच्छा व दिल की हर ख्वाहिस यही पर खत्म होगी। ओमशान्ति।

– सुमन बहन, लखनऊ यूपी